इस असार संसार के सार ब्रह्मा बाबा

ब्रह्मा बाबा, जिनकी अव्यक्त पालना के अब 50 वर्ष हुए हैं, की प्रतिमा बहुमुखी थी। उनके व्यक्तित्व का एक विशेष पहलू यह था कि कोई बच्चा हो या बूढ़ा, धनवान हो या निर्धन, विद्वान हो या अशिक्षित, जल्दी ही उनकी निकटता का अनुभव करता था। हरेक को ऐसा अनुभव होता था कि बाबा के मुखारविन्द से जो शब्द विनिमृत हो रहे हैं, वे आत्मीयता और अपनत्व को लिए हुए हैं। उनमें औपचारिकता कम है, परंतु शिष्टता युक्त स्नेह अधिक। कितना भी कोई कमर कस कर उनके पास आता, वह उनके स्नेह ये घायल हुए बिना न लौटता। वह बाबा से दोबारा अथवा बार बार मिलने की इच्छा मन में लेकर जाता। बाबा का प्यार पत्थर को भी पिघलाकर पानी बना देता और तपत का ताप बुझाकर उसे शांति और शीतलता प्रदान करता। उनके पास बैठकर, उनसे मिलकर, उनके वचन सुनकर ऐस लगता है कि इस बेगाने संसार में हमने यहाँ ही अपनापन पाया है। एक यही जगह है जहाँ कृत्रिमता नहीं बल्कि वास्तविकता है और जिसके वचन हम सुन रहे हैं, उसके मन में एक ऐसा प्यार और दुलार है जो इस विशाल संसार में ढूंढ़ने पर भी अन्य कहीं नहीं मिल सकता। वह प्यार मन में इतना गहरा उतर जाता कि उसकी गहराई समुद्र से भी अधिक और उसकी छाप एक अमिट स्याही के ठप्पे की छाप से भी अधिक अमिट बन जाती।

- ब्र. कु. गंगाधर

उनके वचन एक ऐसा प्रसाद का रूप थे जो सचमुच मन की चंचलता को हर लेते और आत्मा में मिठास भर देते। इसी प्रसंग में दिल्ली के एक व्यक्ति के वृत्तांत का उल्लेख करना समुचित होगा। वह बाबा का कट्टर विरोधी था। उसका कारण यह था कि उसकी धर्मपत्नी ईश्वरीय सेवाकेन्द्र में आती थी और वह उस सपत्नीक जीवन में भी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने में सुदृढ़ थी। वह व्यक्ति समझता था कि बाबा ने उससे कुछ छीन लिया है और उसको भोग सुख से वंचित किया है। अतः उसके मन में बाबा के प्रति घृणा, वैर, द्वेष और रूष्ट भाव था। एक बार जब बाबा दिल्ली में आये तो उसे मालूम हुआ कि जिस ईश्वरीय सेवाकेन्द्र पर उसकी धर्मपत्नी जाती है, वहाँ से एक बस प्रातः 4 से 4:30 बजे क्लास के भाई बहनों को लेकर वहाँ क्लास के लिए जाती है, जहाँ बाबा ठहरे हुए हैं। एक दिन ये सोचकर कि वह भी उस बस के द्वारा वहाँ पहुंचकर बाबा से झगड़ा करेगा, प्रातः ही अपनी धर्मपत्नी के पीछे पीछे आते हुए, धर्मपत्नी के मना करने पर भी केन्द्र पर पहुँचकर उस बस में बैठ गया। सभी ने बहुत प्रयत्न किये उसे क्लास में न ले जाने के और बाबा से दूर रखने के, क्योंकि सभी उसके स्वभाव से वाकिफ थे, लेकिन लाख कोशिशों के बावजूद भी वह क्लास में आ ही गया।

वह वहाँ क्लास के अंत में जाकर बैठा परंतु बैठने के बाद वहाँ से हिला नहीं। क्लास के सारे समय उसने गर्दन भी नहीं हिलाई। वह बाबा को एकटक होकर देखता ही रहा और सुनते सुनते मंत्रमुग्ध हो गया। क्लास के बाद जब उसे उठने के लिए कहा गया तब वह उठता ही नहीं था। उसकी आँखें गीली थी कि आँसू टपकने को आ रहे थे। बाबा से लड़ने की बजाय वह अपनी पत्नी को उलाहना देने लगा। वह बोला, बाबा तो अस्सी साल का जवान है! कितना खूबसूरत है बाबा! कैसे सीधे बैठते हैं! तू अब तक पवित्रता की बात मुझसे कहती रही और ऐसे बाबा के बारे में तो कुछ बताया ही नहीं। मैं बाबा से मिलकर आऊंगा। वह टोली लेने के लिए बाबा की ओर बढ़ा, बाबा ने उसे पुचकारते और मुस्कुराते हुए टोली दी और वह ऐसा खुश हो गया कि जैसे उसे भी अपना बाबा मिल गया।

इसके अलावा बाबा की विशेषताओं में से एक विशेषता थी कि वे ज्ञान को सम्पूर्णता से समझने और समझाने के प्रयत्न केवल लिखित सामग्री ही के द्वारा नहीं करते थे, बल्कि जब कहीं सम्मेलन या प्रवचन आदि होता, उसमें भी बाबा तीन प्रकार की सम्पूर्णता की ओर ले जाने का सदा विशेष प्रयास कराते रहते। एक तो बाबा इस ओर ध्यान खिंचवाते कि वक्ता की अपनी स्थिति पवित्र और योग युक्त होनी चाहिए। इसे वे यों समझाते कि जैसे तलवार में जौहर होना ज़रूरी है, ऐसे ही पवित्रता और योग युक्त स्थिति ज्ञान रूपी तलवार का जौहर है। दूसरा वे इस ओर ध्यान खिंचवाते कि प्रवचन में कौन कौन सी बात बताना ज़रूरी है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए वे समझाते कि जैसे कोई अच्छा वकील ऐसा नुक्ता बता देता है कि जिससे बात जज की समझ में आ जाती है और जो जज पहले फांसी की सजा देने की बात सोच रहा था, वह अब अपराधी को मुक्त करने का निर्णय करता है। वैसे ही ज्ञानवान व्यक्ति को भी ऐसी ऐसी बात सुनानी चाहिए कि पापी, पतित या अपराधी व्यक्ति की बुद्धि में वह ऐसी बैठ जाए कि पहले जहाँ वह भोग विलास के जीवन की ओर प्रवृत्त था अब वह उससे मुक्त होने की बात का निर्णय करे। बाबा कहते कि वकील को अगर समय पर प्वाइंट याद नहीं आयेगी और वो जज के आगे कुछ नहीं रखेगा तो अपराधी अपना मुकदमा हार जाएगा और दण्ड का भागी होगा। यहाँ तक कि हो सकता है उसे मृत्युदंड भी भोगना पड़े। अर्थात् वकील की छोटी सी गफलत से कितना नुकसान हो सकता है। इसी प्रकार ज्ञानवान प्रवक्ता अगर भाषण के समय आवश्यक बातें कहना भूल जाता है तो सुनने वाले लोग विषय विकारों में गोता लगाए दुःख दंड के भागी बनते रहते हैं। तीसरा वे इस बात की ओर ध्यान दिलाते कि बात समझाने की विधि क्या हो। केवल बात ही ज़रूरी नहीं होती, बात करने का तरीका भी महत्वपूर्ण होता है। बात कहना भी एक कला है। उस पर ध्यान देना, उसका अभ्यास करना, उसमें सम्पूर्णता लाना भी ज़रूरी है। इस बात को समझाते हुए वे कहते कि डॉक्टर जब किसी को टिंक्चर आयोडीन लगाता है तब वह उसे साथ साथ सहलाता भी है, फूंक भी मारता है। जब कोई सर्जन किसी का ऑपरेशन करता है तो वह उसे क्लोरोफॉर्म सूंघाता है ताकि उसे दर्द न हो। जब कोई इंजेक्शन लगाता है, तब वह पहले सूई को उबलते पानी में डाल कर कीटाणु रहित और संक्रमण रहित करता है। इस प्रकार बाबा समझाते - दूसरों को सम्मान देते हुए तथा स्नेह और मर्यादा युक्त, शुभ और कल्याण की भावना से, अनुभव, निश्चय और ओज की भाषा से समझाना चाहिए। तब जाकर वह तीर ठिकाने पर लगता है। इस प्रकार बाबा हर प्रकार से ज्ञान एवं योग के महत्व को समझाते थे। ऐसे बाबा को भूलना संभव नहीं।

वह दिन दूर नहीं जब समस्त विश्व उन्हें जगतपिता स्वीकारेगा

जैसे हीरों को केवल जौहरी ही परख सकता है। अन्य कोई नहीं, वैसे ही महान आत्माओं की महानताओं की परख कुछ सूक्ष्म दृष्टि वाले ही कर सकते हैं, क्योंकि महान आत्माएं अपनी महानताओं का उल्लेख स्वयं नहीं करतीं और परखने के बाद उन महानताओं से अपने जीवन का श्रृंगार करने वाले और भी कम होते हैं। प्रारम्भ से ही पिता श्री ब्रह्मा की महानताओं की ओर मेरी सूक्ष्म दृष्टि रही। मेरी यह श्रेष्ठ आकांक्षा थी कि बाबा से सबकुछ प्राप्त कर लूँ। मैंने देखा कि वे एक सच्चे पिता थे। उनसे सभी को पिता-पन का आभास होता था। हम उनके द्वारा ईश्वरीय ज्ञान सुनकर उत्पन्न हुए, इसलिए हम उनकी मुख सन्तान कहलाये। उनके अव्यक्त होने के बाद जो उनके बच्चे बने, उनके लिए बाबा प्रजापिता है और जो उन्हें अन्त में पहचानेंगे, वे उन्हें जगतपिता कहेंगे। हमें महसूस होता है कि थोड़े ही समय में समस्त विश्व उन्हें जगतपिता मानेगा अपने अनुभवों के आधार पर। मुझे उनसे बार-बार प्रेरणाएं मिली हैं कि जैसी भासना हमें बाबा ने दी वैसी ही भासना हम दूसरों को दें। जैसे बाबा ने हमें पालकर बड़ा किया, वैसे ही हम दूसरों को पालना दें। भले ही हम जगत पिता तो नहीं हैं, परन्तु हैं तो उन्हें फॉलो करने वाले उनके ही महान बच्चे।

दूसरी मुख्य बात - मैंने देखा कि बाबा में तनिक भी कर्तापन का भान नहीं था। बाबा सदा कहते थे कि सब कुछ शिव बाबा ही करता है या बच्चे करते हैं। अपने को सदा ही छुपाये रखना व बच्चों को स्वमान देना - यही मानवता हमने बाबा से सीखी। मुझे इस बात का सदा ख्याल रहता है कि कर्तापन का तनिक भी भान न आये।

हमें बाबा ने सिखाया कि शिव बाबा से ईमानदार कैसे रहना चाहिए। सम्पूर्ण सम्पत्ति का चाहे वह उनकी स्वयं की थी या अन्य आत्माओं ने यज्ञ में दी थी वे उसके सम्पूर्ण ट्रस्टी थे। यही विशेषता उन्होंने हमें सिखाई। इसी ईमानदारी से हमारा सारा व्यवहार सरल हो गया। हम भगवान के समीप आ गये और हमारी अधीनता भी समाप्त हो गई।

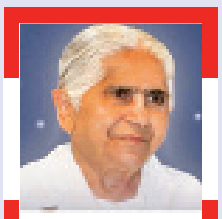
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

मैंने ज्ञान मंथन करने की मुख्य विशेषता बाबा से सीखी। शिवबाबा के ज्ञान पर मंथन कैसे करें ताकि अपनी बुद्धि का ज़रा भी अंहकार न रहे, यह बात बाबा में प्रत्यक्ष देखी।

बाबा ने हमें सिखाया कि आपस में अलौकिक वातावरण कैसे होता है, अलौकिक भाषा कैसी होती है तथा अलौकिक सम्बन्ध कैसा होता है। जब भी बाबा के पास जाते, ये तीनों बातें स्पष्ट देखने में आती थी। बाबा के पास किसी भी तरह की लौकिकता नज़र नहीं आती थी। वास्तव में लौकिकता से दिव्यता मिस हो जाती है।

बाबा ने हमें सिखाया है कि हम संसार में कैसे, शिवबाबा से कैसे रहें, अपने से कैसे रहें, अपने को कैसे रखें, अपना स्वमान कैसे रखें। रूहानियत भी हो तो नारायणी नशा भी हो।

बाबा को सदा ही हमने पूरी अथॉरिटी में देखा। परिस्थितियों में बाबा कहते थे कि तुम डरो नहीं। सब बाबा के ही बच्चे हैं। इस प्रकार बाबा ने हमें अति निर्भय बना दिया। बाबा अपनी एनर्जी वेस्ट नहीं होने देते थे। सदा यही संकल्प रखते थे कि मेरी एनर्जी सभी को मिलती रहे। बाबा अन्दर ही अन्दर शिवबाबा से एनर्जी खींचते रहते थे। मुझे कभी-कभी सोलह-सोलह घण्टे भी कार्यक्रमों में रहना पड़ता है, परन्तु मुझे नहीं लगता है कि मेरी एनर्जी नष्ट हो रही है। सदा शक्ति बढ़ने का ही अनुभव रहता है। इसी तरह जब मैं किसी बड़े प्रोग्राम में होती हूँ, तो मुझे कभी हीन भावना नहीं आती। टॉपिक चाहे कैसा भी हो, जब तक दूसरे वक्ता भाषण करते हैं, मैं योग युक्त होकर साइलेंस की शक्ति इकट्ठी करती रहती हूँ। यद्यपि मैं उनकी भाषा नहीं समझती, तो भी मुझे ये ख्याल नहीं आते कि इन्होंने क्या बोला या मैं अच्छा बोलूं, पता नहीं उन्हें अच्छा लगेगा या नहीं। मुझे इस तरह की कोई भी उलझन नहीं होती। मैं अपनी श्रेष्ठ स्थिति में रहती हूँ और सब कुछ श्रेष्ठ होता है। सेवा के लिए बाबा ने हमें बहुत कुछ सिखाया। समानता में रहने का बीज डाल दिया, हिम्मत से भरपूर कर दिया, आध्यात्मिक शक्ति भर दी जो कि आज विश्व की सेवा में काम आ रही है। आज दुनिया में अनेक आत्माएं सत्य की प्यासी हैं, हमें रहता है कि इन्हें कुछ दें।

सेवा में मैं निमित्त बनी हुई आत्माओं का अधिक ध्यान रखती हूँ, यही बाबा से सीखा है। मैं ही करूँ, यह संकल्प कम रहता है। बाबा ने कूट-कूट कर भर दिया है कि सेवा में अनासक्त वृत्ति ही सफलता का आधार है। जो हुआ वो भी याद नहीं, जो होगा उसकी भी चिन्ता नहीं। सेवा के लिए मन में उलझन नहीं, उमंग अवश्य है। संशय भी नहीं रहता कि सफलता होगी या नहीं।

मुझे कभी फल देखने की इच्छा नहीं होती कि हमने जो सेवा की, उसका फल क्या निकला। बाबा ने सिखा दिया कि डाला हुआ बीज कभी निष्फल नहीं जाता। सार में मैं कहूँ, न कोई इच्छा है, न मैं भारी हूँ। प्रोग्राम बनें, यह इच्छा नहीं, और बने तो कोई भारीपन नहीं। हम कर ही नहीं रहे हैं, वही करा रहा है, अतः महिमा उसी की करो।

मैं तो यही कहूंगी कि भगवान के दर पर कोई भी अभिमान नहीं रख सकता, बाबा ने अपनी निर्माणता से हमें यही सिखाया। यहाँ पर तो बाप समान निमित्त व निर्माण व्यक्ति ही ज़िन्दा रह सकता है अर्थात् सफल होता है। तो बाबा के स्मृति दिवस, अर्थात् अठारह जनवरी का दिन ज्यों-ज्यों समीप आता है, बाबा का सम्पूर्ण चित्र सामने स्पष्ट हो जाता है। उनका प्यार श्रेष्ठ प्रेरणाएं देता रहता है। ऐसे सच्चे पिता पर ये मन कुर्बान है।

ब्रह्मा समान बनने का फाउण्डेशन - निश्चयबुद्धि

बाबा को हम सबने दिल से कहा कि बाबा, हमें आप जैसा बनना ही है। बनना ही है - यही आवाज़ है हम सभी की। बनेंगे, देखेंगे, सोचेंगे, पता नहीं बन सकेंगे या नहीं बन सकेंगे, ऐसा तो नहीं! जिसमें दृढ़ता है, वो बनेंगे ज़रूर, क्योंकि दृढ़ता सफलता की चाबी है। बाबा ने हम सबको ऐसी चाबी दी है, भले उसे जादू की चाबी कहो। अगर दृढ़ता है तो सफलता है ही।

साक्षात्कारमूर्त तब बनेंगे जब साक्षात बाप समान बनेंगे। तो आप देखो, बाबा की सबसे पहली पहली विशेषता क्या रही? ब्रह्मा बाबा को शिव बाबा ने टच किया और ब्रह्मा बाबा ने उस संकल्प में थोड़ा भी संशय नहीं लाया। क्या होगा, कैसे होगा, मैं सबकुछ छोड़ तो दूं लेकिन आगे स्थापना कर सकूंगा या नहीं कर सकूंगा? नयी बात थी ना! दुनिया में द्वापर से लेकर अभी कलियुग तक जो बात किसी ने नहीं कही थी कि प्रवृत्ति में रहकर भी आप निर्विकारी रह सकते हैं, पवित्र रह सकते हैं। अभी तक भी इतने साधु, सन्त, महात्मा, मंडलेश्वर जो भी हैं, वे भी विश्वास नहीं करते हैं कि आग और कपास साथ में हों और आग नहीं लगे। ये हो ही नहीं सकता - वे ये शब्द बोलते हैं, लेकिन बाबा के प्रवृत्ति में रहने वाले बच्चे बोलते हैं कि आग और कपास साथ हैं तो भी अपवित्रता की आग नहीं लग सकती।

शुरू शुरू में सिंध हैदराबाद में माताओं-बहनों के पवित्रता अपनाने के कारण बहुत विघ्न पड़े। बाबा को पंचायत में बुलाया गया। पंचों ने बाबा से कहा कि तुम इन्हें पवित्रता के बारे में मत बताओ। तो बाबा ने कहा कि मैं यह वायदा नहीं कर सकता और इन्हें भी कह नहीं सकता क्योंकि शिव बाबा ने मुझे यही आज्ञा दी है कि तुमको पवित्र बनकर, पवित्र दुनिया की स्थापना करनी है। इस ईश्वरीय ज्ञान का फाउण्डेशन ही यही है और मैं कहूँ कि पवित्र नहीं बनो तो पवित्र दुनिया स्थापन होगी कैसे? मैं यह नहीं कह सकता हूँ। मुझे शिव बाबा का डायरेक्शन है, मैं उसको टाल नहीं सकता। ऐसा निश्चय है! इतनी हिम्मत चाहिए ना!

बाबा को ज़रा भी संशय नहीं आया। बाबा इतना बड़ा जौहरी था। जब सबकुछ यज्ञ में समर्पित कर दिया तो कभी सोचा कि मेरे परिवार का क्या होगा? मेरी प्रतिष्ठा का क्या होगा? मेरा इतना बड़ा परिवार है, सब कुछ समर्पण कर दिया तो वे भूखे तो नहीं मरेंगे! ऐसा कुछ भी नहीं सोचा। उनमें यही लगन थी कि बाबा जो कहता है मुझे वैसा ही करना है। इसको कहा जाता है निश्चय। आपके आगे एग्ज़ाम्पल है। आज इतना बड़ा पवित्र प्रवृत्ति वाला ब्राह्मण परिवार है। लेकिन उस समय ब्रह्मा बाबा अकेला था, उनके आगे कोई दृष्टांत, एग्ज़ाम्पल नहीं था। नयी बात थी। इतनी नयी बात कि लोग असम्भव मानते थे। उस असम्भव को बाबा ने सम्भव बनाकर दिखाया। संकल्प मात्र में भी, स्वप्न मात्र में भी बाबा को संशय नहीं आया। इसको कहते हैं बाप समान। बाप समान बनना माना साक्षात बाबा बनना। तभी हम साक्षात्कारमूर्त बन सकते हैं।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

ब्रह्मा बाप समान बनने के लिए पहला फाउण्डेशन है निश्चयबुद्धि। अपने आपसे पूछो, हम बाप समान निश्चयबुद्धि हैं? सिर्फ बाबा में निश्चय नहीं। बाबा से हमारा प्यार बहुत है। बाबा के लिए हम कुछ भी करने के लिए तैयार हैं। बाबा कुछ भी कहें, हम कर लेंगे। लेकिन बाबा कहते हैं कि कोई भी चीज़ अगर हिलती है तो आप चारो तरफ से बिल्कुल टाइट करेंगे ताकि हिले नहीं। हिलेगी नहीं तो टूटेगी नहीं।

इसी रीति से बाप समान बनना है तो आपको भी चारो तरफ का निश्चय चाहिए। बाबा पर, स्वयं पर, ड्रामा पर और ब्राह्मण परिवार में निश्चय पक्का हो। निश्चय के आधार पर ही विजय माला का मणका बनेंगे।